International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 5.143, Volume 02, No. 03, July - September, 2020, pp.447-450

प्रेमचन्द की कहानियों में मुहावरों एवं लोकोक्तियों का रूपात्मक अध्ययन

डॉ. मीनू लता सिंह*

प्रस्तावना

भाषा में तल्खता लाने, श्रोता के जिज्ञासु मन को शांत करने, नीति–प्रकट करने अथवा अपने कथन को सुसज्जित करने में मुहावरे और लोकोक्तियों का महत्व सर्वथा सिद्ध है। क्योंकि मुहावरा ऐसा वाक्यांश है जो अपने सरलार्थ को छोड़ किसी अन्य विलक्षण अर्थ के लिए रूढ़ हो जाते हैं। इनके विनियोग से वाक्य चमत्कृत हो जाते हैं। वैसे ही लोकोक्ति वह संक्षिप्त वाक्य है, जो सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त होती है और आलंकारिक शैली में होने के कारण भाषा में तीव्रता और व्यंग्यात्मकता लाती है।

संसार की समृद्ध भाषाओं की तरह हिन्दी भाषा के प्रयोक्ता वर्ग में वे प्रतिभाशाली साहित्यकार भी आते है, जिन्होने हिन्दी अथवा इसकी कुछ खास बोलियों के द्वारा अपनी मार्मिक संवेदना और बहुमूल्य विचारणा को अभिव्यक्ति दी है। ऐसा करते हुए इन रचयिताओं ने अपनी भाषा को संस्कार भी दिया है। एक ओर इनकी कृतियाँ हिन्दी भाषा की सृष्टि हैं, तो दूसरी ओर ये इस भाषा की स्रष्टा भी हैं। असाधारण सूझ–बूझ रखनेवाले प्रेमचन्द जी ने युग–यथार्थ को जाना और उसके अंग–अंश बनकर उसे महसूस किया। कालजयी साहित्यकार लोक की भावना एवं आकांक्षा से पूर्ण परिचित होते हैं। प्रेमचन्द भी कालजयी कथाकार हैं, जो आज भी हमारी समस्याओं में अपनी कहानियों के माध्यम जीवित हैं।

किसी भाषा–विशेष में प्रयुक्त मुहावरे और लोकोक्ति का अध्ययन, अध्ययन की दशा और दिशा को दर्शाती हैं। इसमें समग्र लाक्षणिक, व्यंजनात्मक, बिम्बात्मक, प्रतीकात्मक, लयात्मक और तमाम अलंकरण से सम्बद्ध प्रयोग, सम्बद्ध भाषा की सम्पत्ति बन जाते हैं। प्रस्तुत आलेख का उद्धेश्य रूपात्मक अध्ययन के आधार पर प्रेमचन्द की कहानियों में प्रयुक्त मुहावरों और लोकोक्तियों का संरचनात्मक एवं भावात्मक स्वरूप की दृष्टि से विवेचन करना है। इसमें विवेच्य कहानियों के संदर्भो, वाक्यों में प्रयुक्त शब्दों के रूपतत्व एवं प्रकार्यो को दृष्टि पथ में रखकर ही रूपात्मक अध्ययन किया गया है।

हिन्दी भाषा के शीर्षस्थ कथाकार मुंशी प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों के पात्रों किसान, मजदूर, जमींदार, मिल–मालिक, सर्वहारा स्त्री–पुरूष आदि की चित्तवृत्तियों के अगणित भावों की अभिव्यक्ति में प्रेमचन्द द्वारा प्रयुक्त मुहावरे और लोकोक्तियाँ बड़ी ही सार्थक साभिप्राय एवं व्यंजकतापूर्ण भूमिका निभा रही हैं। अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से प्रेमचन्द की भावाभिव्यक्ति में मुहावरों–लोकोक्तियों की सहयोगी शनिम्नोद्धृत अध्ययन–संदर्भों द्वारा विवेच्य कहानीकार के भाषिक सामर्थ्य एवं भाव–प्रेषण क्षमता पर भी प्रकाश पड़ता है–

लयबद्ध गद्य

गद्य में लयात्मकता की प्रवृति प्रेमचन्द की शैली का एक अंग है, जो प्रसंग को रोचक बनाते हैं। एक उदाहरण द्रष्टव्य है– खून का बदला खून, धनहानि का बदला खून, अपमान का बदला खून– मानव रक्त से ही सभी झगड़ों का निबटारा होता था।

उपर्युक्त गद्य पंक्ति पर गौर करने से लय की अनुभूति होती है। गद्य में पद्य का लयात्मक समावेश प्रेमचन्द की विशिष्टता का ही प्रमाण है।

---

6 पीएच.डी., हिन्दी विभाग, तिलकामांझी भागलपुर विश्वविद्यालय, बिहार।

लक्षणा एवं व्यंजनामिश्रित व्यंग्य

अपने भावों को तल्ख शब्दों के सहारे व्यक्त करने की कला में प्रेमचन्द निपुण हैं। जैसाकि हम जानते हैं कि लक्षणा और व्यंजना शब्दशक्ति भावों का अभीष्ट सफलतापूर्वक सिद्ध करता है और इसका सटीक प्रयोग दिखाने में प्रेमचन्द कहीं भी चूके नहीं हैं। इसका प्रमाण प्रस्तुत प्रसंग है–

लोग समझते थे कि एक महीने का झंझट है, किसी तरह काट लें, कहीं कार्य सिद्ध हो गया तो कौन पूछता है। लेकिन मनुष्यों का वह बूढ़ा जौहरी आड़ में बैठा हुआ देख रहा था कि इन बगुलों में हंस कहाँ छिपा हुआ है।[1]

ऐसे लक्षणा एवं व्यंजना मिश्रित उदाहरण प्रेमचन्द की कहानियों में प्रायः देखने को मिलती हैं। शायद इसीलिए इनके कथन की व्यंजकता रोचक हो जाती है।

काव्यात्मक शैली

प्रेमचन्द भाषा के सिद्धहस्त शिल्पी थे, इनकी भाषा स्वाभाविक प्रौढ़ता का प्रमाण देती है। भावाभिव्यक्ति क्रम में इनकी लेखनी स्वाभाविक प्रवाह में बहते हुए गद्य में काव्यात्मकता का समावेश कर जाती है।[2] जो गद्यात्मक शैली में पद्य के अनूठे संगम को मूर्त करता है। भाषा का ऐसा सुगठित प्रयोग एक सधा हुआ साहित्यकार ही कर सकता है, जिसका भाषा पर एकाधिकार हो। प्रेमचन्द द्वारा प्रयुक्त सुगठित भाषा–प्रयोग का उत्कृष्ट उदाहरण है। साथ ही, यहाँ यह कहना भी अनुकूल होगा कि मुहावरे का प्रयोग तो यहाँ हुआ ही है, अलंकारों से सुसज्जित यह प्रसंग इसका प्रमाण है कि प्रेमचन्द एक भावुक कवि का हव्दय भी रखते हैं।

प्रेमचन्द जी अपनी कहानियों में प्रयुक्त मुहावरों में प्रत्यभिज्ञान द्वारा रसात्मकता का संचार करने में पूर्ण सफल हुए हैं।

मैं चुपके से जीने पर चढ़ा और छत पर जा पहुँचा। वहाँ इस वक्त बिल्कुल सन्नाटा था। उसे देखकर मेरा दिल भर आया। हाय! यही वह स्थान है, जहाँ हमने प्रेम के आनन्द उठाये थे।[1]

प्रस्तुत प्रसंग में यही वह स्थान है से प्रत्यभिज्ञान का आभास हो रहा है। ठीक इसीप्रकार, स्मृत्याभास कल्पना का भी प्रयोग इन्होनें बखूबी किया है। उदाहरणार्थः–

आपका लेख पढ़कर दिल थामकर रह गया, अतीत जीवन आँखों के सामने मूर्त्तिमान हो गया अथवा आपके भाव साहित्य–सागर के उज्जवल रत्न हैं, जिनकी चमक कभी कम न होगी।[2]

यह वह कल्पना है जो सुनकर या पढ़कर हमारी स्मृति में कल्पित होती है। इसमें उभरी कल्पना 'स्मृति' या 'प्रत्यभिज्ञान' का सा रूप धारण करके पाठक के चित्त में रसात्मकता का संचार कराती है। इनके अतिरिक्त, विद्वान लेखक ने पाश्चात्य अलंकार मानवीकरण की चित्रात्मकता को मुहावरों और लोकोक्तियों की सम्मिश्रित स्थिति के साथ अपनी भावाभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है।

वही कुस्तुनतुनिया, जो सौ साल पहले तुर्कों के आतंक से आहत हो रहा था, आज उनके गर्म रक्त से अपना कलेजा ठण्ढ़ा कर रहा है।

जब जड़ पदार्थ या वस्तु या स्थान पर चेतना का आरोप किया जाय तो मानवीकरण अलंकार होता है। यहाँ 'कुस्तुनतुनिया' स्थानवाची संज्ञा है, जिसमें प्रतिशोध की भावना को आरोपित किया गया है, यह कहकर कि तुर्कों के रक्त से उसका कलेजा ठंढ़ा हो रहा है। जिसके सहयोग से भाव में तीव्रता का समावेश हुआ है।

इन्ही विशिष्ट शैलियों में अपने भाव की सम्प्रषणीयता बढ़ाने के लिए प्रेमचन्द ने अपनी कहानियों में जब प्रेमचन्द पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग करते है, तब ऐसा प्रतीत होता है मानो उस पात्र के इर्द–गिर्द इन्होनें जीवन जीया है। पात्रानुकूल भाषिक प्रवृति ऐसे ही साहित्यकार में आती है, जिन्होनें अपने पात्रों की स्वाभाविकता को ग्रहण किया हो। चाहे वह भाषा, भाव या प्रवृत्ति कोई भी क्षेत्र हो, उनमें गहरी पैठ होना आवश्यक है।

कथासम्राट की कहानियों में बहुलांश ग्रामीण वातावरण एवं माहौल का ही चित्रण हुआ है, इसलिए ग्रामीण भाषा का प्रयोग भी स्वाभाविक ही है। (ग्राम्य शब्द वे हैं जो शिष्ट समाज में प्रयोग के अनुपयुक्त समझे

जाते हैं। ये शब्द समाज के निम्न स्तर पर प्रयुक्त होते हैं।) इनमें भी मुहावरों या लोकोक्तियों का स्वाभाविक भाषानुकूल प्रवाह में प्रयोग द्रष्टव्य है, जो इस बात का प्रमाण है कि प्रेमचन्द की लेखनी मुहावरों से ही सजी–संवरी है।–यथा–

लिखा था– स्वस्ति श्री, सर्व उपमा योग सो तुम जाय के बम्बई में बैठि रहयौ, कान में तेल डारिकै।[1]

(प्रेम0 की सम्पू0 कहा0, भाग–2, मोटेराम की डायरी, 87)

सोना– ऐसे तो बड़े विद्वान बनते हैं। अब काहे नहीं बोलत बनत। मुँह में दही जम गया, जीभै नहीं खुलत है।[2]

उपर्युक्त प्रसंगों में स्पष्ट लक्षित है कि इनकी भाषिक क्षमता को मुहावरे बल देते है, जिनसे वाक्य रचना रोचक बन जाती है।

प्रत्यभिज्ञान

वस्तुतः यह रस–संचरण का वह माध्यम है, जिसमें प्रत्यक्ष घटित घटना या किसी वस्तु को देखकर स्मृति में पूर्व परिचित घटनाओं का स्मरण होता है। लोकोक्तियों का भी प्रयोग किया है, जो बहुसंदर्भी हैं। जिनका परिस्थिति, परिवेश एवं समयानुकूल प्रयोग द्वारा अपने कथन को विशिष्ट बना दिया है। इनके कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं–

जिनके नाम पर फाका कर रहे हो, उन्होंने मजे से लड़कों को खिलाया और आप खाया अब आराम से सो रही हैं। मोर पिया मोरी बात न पूछे मोर सुहागिन नांप।[1]

यहाँ पात्र का क्रोध और व्यंग्य दोनों साथ ही साथ लोकोक्ति के माध्यम से व्यक्त हो रहा है। इसलिए भाव की व्यंजकता बढ़ गई है। एक अन्य उदाहरण द्रष्टव्य है–

मोटेराम–साहब, मैं गुप्त धन का पता लगा सकता हूँ। पितरों को बुला सकता हूँ, केवल गुण–ग्राहक चाहिए। संसार में गुणियों का अभाव नहीं, गुणज्ञों का ही अभाव है– गुन न हिरानो,गुन–नाहक हिरानो।[2]

प्रयोग की उपयुक्तता के कारण भी प्रेमचन्द की लोकोक्तियों चाहे मुहावरों का विशेष महत्व हो जाता है। इनका समयानुकूल एवं परिस्थिति के अनुसार प्रयोग कर प्रेमचन्द अपने मंतव्य पाठक तक सटीक एवं सही तरीके से पहुँचाने में समर्थ एवं सक्षम हो पाते हैं।

कोई कहता, हमें इससे क्या मतलब आनंदी जानें और वह जानें। दोनों जैसे के तैसे है, जैसे उदई वैसे मान, न उनके चोटी न उनके कान।[3]

जब दो ऐसे व्यक्ति, परस्पर सम्बन्ध स्थापित कर लें, जिनमें कोई न कोई दोष अवश्य हो तो उनके प्रति व्यंग्य में ऐसा कहते हैं। यहाँ प्रेमचन्द की लोक समझ एवं उन्हें अपनी कहानियों में साक्ष्य रूप में प्रस्तुत करने की कला में निपुणता का ही प्रमाण है।

इनके अलावा, भी कई लोक प्रचलित लोकोक्तियों का प्रयोग इन्होनें अपनी बात को अधिक सम्प्रषणीय बनाने के क्रम में स्वाभाविक एवं प्रवाहपूर्ण शैली में प्रस्तुत किया है। जो इनके कथानक को सबल बनाने में सहायक हैं। जैसे– ओछे की प्रीत बालू की भीत, सत्तर चूहे खाकर बिल्ली चली हज को, मनचंगा तो कठौती में गंगा, कौवा चला हंस की चाल, घर में दिया जलाकर मस्जिद में जलाया जाता है, इत्यादि।

प्रेमचन्द की कहानियों के मुहावरों और लोकोक्तियों से संबद्ध संदर्भों के अध्ययन से मुख्यतः ये तथ्य प्रकाश में आते हैः

- मुंशी प्रेमचन्द की कहानियों में लोकोक्तियों की तुलना में मुहावरों का बाहुल्य है।
- अगणित भाव–राशियों के उतार–चढ़ाव के बीच मुख्यतः आशा–निराशा, हर्ष–उल्लास, उत्साह, बुद्धि–कौशल, सफलता–विफलता, हास्य एवं व्यंग्य–विनोद, प्रशंसा, घृणा, दृढ़ता, ईर्ष्या, चिंता, विषाद, आशंका, भय, क्रोध, प्रलोभन, स्तंभजनित, भर्त्सना, गर्व, पश्चाताप, चातुर्य, कृतज्ञता, वीरता, करूणा,

लज्जा, प्रतिद्वन्द्विता, आशीर्वादात्मक शैली, आज्ञात्मक शैली, निःस्वार्थ सेवा, यथार्थकथन, न्यायसम्मत, धार्मिक विश्वास, आक्रामक मुद्रा, पूर्वापर–क्रम, चाक्षुष बिम्ब, इतिहासपरक आदि भावों की अभिव्यक्ति हुई है। विशिष्ट भाषिक प्रयोगों में लयबद्ध गद्य, लक्षणा–व्यंजनामिश्रित प्रयोग, काव्यात्मक शैली, ग्राम्य प्रयोग, प्रत्यभिज्ञान, स्मृत्याभास कल्पना, मानवीकरण अलंकार आदि विशिष्ट भावों की सफल अभिव्यक्ति के लिए प्रेमचन्द जी ने हिन्दी भाषी राष्ट्र की प्रज्ञा में सुरक्षित मुहावरों और लाकोक्तियों का उपयोग किया है।

- मुहावरों के प्रभाव को उपमाओं द्वारा विशिष्ट बना दिया गया है, जो भाषा की अपेक्षा भाव पर अधिक बल देते हैं।
- कथासम्राट द्वारा प्रयुक्त मुहावरे और लोकोक्तियों से गठित वाक्य–योजना इस बात का साक्ष्य प्रस्तुत करती हैं कि ये साहित्यिकता की अपेक्षा ग्राम–जीवन के अधिक निकट है। साथ ही, इनकी भाषा इन प्रयोगों से बोझिल न होकर सहज प्रवाहयुक्त हैं अर्थात् इन्होंने अपनी भाषिक–संघटना में इन्हें (मुहावरेलोकोक्तियों) को भलीभाँति आत्मसात् कर लिया है।

समग्रतः, इनकी साहित्य–सम्पदा अतिविशिष्ट श्रेणी में रखी जा सकती है, क्योंकि मुहावरों और लोकोक्तियों के में रूप में हमारी सभ्यता एवं संस्कृति को अपने साहित्य–संसार में इन्होंने आत्मसात् कर लिया है। निश्चय ही, गद्यभाषा की भाषिक क्षमता मुंशी प्रेमचन्द को विश्व साहित्य के श्रेष्ठ, परिनिष्ठित गद्यकारों की अगली पंक्ति में खड़ा कर पाने में पूर्णतः समर्थ है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- प्रेम. की सम्पू. कहाय भाग–2, परीक्षाय 763
- प्रेम. की सम्पू. कहा.य भाग–1, लैलाय 535
- प्रेम. की सम्पू. कहा.य भाग–1, दिल की रानीय 117
- प्रेम. की सम्पू. कहा.य भाग–2, मोटेराम की डायरीय 87
- प्रेम. की सम्पू. कहा.य भाग–2, निमंत्रणय 18
- प्रेम. की सम्पू. कहा. भाग–1, अलग्योझाश्य 10
- प्रेम. की सम्पू. कहा. भाग–1, सत्याग्रहश्य 623
- प्रेम. की सम्पू. कहा. भाग–2, त्यागी का प्रेमश्य 233

❖◆❖